## नज़्म सुभाष

दबे कुचले हताहत इसलिए इंसान दिखते हैं।
जिधर भी डालिए नज़रें उधर हैवान दिखते हैं।

लगाई उल्लुओं ने जब से पंचायत गुलिस्तां में,
हैं पत्ते कांपते रहते तने हैरान दिखते हैं।

वही मस्जिद वही मंदिर,है केवल फेर नज़रों का ,
वहीं अल्लाह दिखते हैं वहीं भगवान दिखते हैं।

भला कबतक डटे रहते मछेरे अपनी नावों में,
समुंदर में उमड़ते कुछ नये तूफ़ान दिखते हैं।

कहीं पर बम धमाके हैं कहीं है अश्क़ आंखों में,
मगर ख़ामोश हैं सारे सभी अंजान दिखते हैं।

लड़ा जाएगा भीषण युद्ध अब सत्ता में आने को,
'नये संदर्भ' में इतिहास के अभियान दिखते हैं।

## केशव शरण

चमन में फूल क्या खिलते नहीं हैं
हमीं हैं जो कभी मिलते नहीं हैं

मुहब्बत हो गई अभियान अब तो
हमीं अभियान पर पिलते नहीं हैं

छुपाये हो कहाँ ख़ुद को न जाने
तुम्हारे सूत्र तक मिलते नहीं हैं

नज़र आते सभी के ख़ुश्क चेहरे
तुम्हें देखे बिना खिलते नहीं हैं

झलक ही एक मिल जाये तुम्हारी
लगाकर ध्यान हम हिलते नहीं हैं


ISSN:2583-8849